# संशोधित पाठभेद

| पृष्ठ | पंक्ति | मुद्रितपाठ | संशोधित पाठ |
|---|---|---|---|
| १ | १० | तत्थणामंतरसद्दो | तत्थ णामंतरं, अंतरसद्दो |
| ५ | ८ | पढमिल्लमिणं | पढमिल्लं |
| ७ | ७ | पयारेण छावट्ठी | पयारेण वेछावट्ठी |
| १० | ७ | मेत्तेण | मेत्तेहि |
| १० | १४ | कालमें अन्तमुहूर्त काल शेष रहनेपर | अंतर्मुहूर्त कालद्वारा |
| १० | २७ | भागमात्र आयामके द्वारा | भागप्रमाण आयामवाले तथा |
| १४ | १७ | असंयतादि गुण | प्रमत्तादि नीचेके गुण |
| १७ | ५ | गढो (एवं) दसहि अन्तोमुहुत्तेहि | गदोलद्धमुक्कस्संतरं दोहि अंतोमुहुत्तेहि |
| | | ऊणमद्धपोग्गलपरियट्टं (अप्पम-त्तस्सुक्कस्संतदं होदि) | ऊणमद्ध पोग्गलपरियट्टं |
| १९ | ३ | मोदरिय | मोदारिय |
| १९ | १० | मुवणमिय | मुवसामिय |
| १९ | २६ | प्राप्तकर | उपशमाकर |
| २० | ६ | ऊणमद्ध | ऊणियमद्ध |
| २७ | १ | सत्तम | सत्त |
| ३० | १ | चेवमस्सिदूण | चेवस्सिदूण |
| ३७ | १० | संजम | संजमासंजम |
| ३७ | २७ | संयमका | संयमासंयमका |
| ४० | ५ | अवसाणे (उवसमसम्मत्तं घेत्तूण) एग | अवसाणे एग |
| ४० | १९ | अन्तमें (उपशमसम्यक्त्व ग्रहण करके) आयुके | अन्तमें आयुके |
| ४८ | ३-४ | जीवेसु अण्णगुणं | जीवेसु सव्वेसु अण्णगुणं |
| ५६ | २१ | इस इतनी महान् राशिका | बढी हुई इस राशिका |
| ५९ | २१ | उत्कृष्ट | जघन्य |
| ५९ | २२ | उत्कृष्ट | जघन्य |
| ६० | ६ | तिहि | बेहि |
| ६० | २३ | तीन | दो |
| ६४ | ५ | समएहि अंतो | समएहि छहि अंतोमुहुत्तेहि |

| पृष्ठ | पंक्ति | मुद्रतिपाठ | संशोधितपाठ |
|---|---|---|---|
| ६४ | १७ | ओर अंतर्मुहूर्त | और छह अतंर्मुहूर्त |
| ७७ | २६ | गतिकी अपेक्षा | इन्द्रियकी अपेक्षा |
| ९७ | ७ | देवेसु | देवीसु |
| ९७ | २२ | देवोंमें | देवियोंमें |
| १०० | ८ | अप्पमत्तत्थीवेदाणं | अप्पसत्थत्थीवेदाणं |
| १०० | २२ | अप्रमत्तसंयत स्त्रीवेदियोंका | अप्रशस्त स्त्रीवेदियोंका |
| १०७ | ९ | उवसामिदो | उवसमिगो |
| ११९ | ६ | (पुव्वकोडि) वस्सेसु | दिवसेसु |
| ११९ | २४ | की गई अडतालीस पूर्वकोटी वर्षों | किये गये अडतालीस दिनोंमें |
| १२१ | १ | अंतरब्भंतरादो | अब्भंतराओ दो |
| १२१ | १५ | अप्रमत्तसंयतका काल | अप्रमत्तसंयतके दो काल |
| १२१ | २४ | तीनों ज्ञानवाले | मति-श्रुतज्ञानवाले |
| १३४ | २० | पलिदोवमस्स | उक्कस्सेण पलिदोवमस्स |
| १३४ | २५ | पल्योपमका | उत्कृष्टसे पल्योपमका |
| १३५ | ६ | (६) अप्पमत्तो | (६) पमत्तो |
| १३९ | २ | गदो अचक्खु दंसणीसु | गदो अचक्खुदंसणपा-ओग्गमावलियाए असंखेज्ज-दिभागमच्छिदूण अचक्खु-दंसणीसु |
| १३९ | ६ | असंखेज्ञलोग | असंखेज्ञालोग |
| १३९ | १४ | और अचक्षुदर्शनी जीवोंमें | और अचक्षुदर्शनी जीवोंके योग्य अवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक रहकर अचक्षुदर्शनी जीवोंमें |
| १३९ | २१ | असंख्यात | असंख्यातासंख्यात |
| १४२ | ८ | खवाणमोघं | खवगाणमोघं |
| १५० | १ | बेवि मिच्छत्त | बे वि जणा मिच्छत्त |
| १५१ | ९ | पडिदूणंतरिय | चडिदूणंतरिय |
| १५७ | ३ | वि अंतोमुहुत्तेहि | बे अंतोमुहुत्तेहि |
| १५७ | ५ | पमत्तसंजदा | पमत्त-अप्पमत्तसंजदा |
| १५७ | १८ | पमत्त संयत | प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत |

| पृष्ठ | पंक्ति | मुद्रतिपाठ | संशोधितपाठ |
|---|---|---|---|
| १५८ | १ | द्विदिएसु | द्विदिएसु देवेसु |
| १५९ | ११ | अब्भंतरिमाए | अंतरब्भंतरिमाए |
| १६० | १ | ए अद्ध | अद्ध |
| १६२ | ४ | परुविदव्वं | परूवेदव्वं |
| १६४ | ११ | पुव्वकोडाएसु | पुव्वकोडाउएसु |
| १६५ | १ | पमत्तापमत्त | तदो पमत्तापमत्त |
| १६९ | ५ | विसेसा | विसेसो |
| १७१ | २ | गुण संकंतीए | गुणंतर संकंतीए |
| १७१ | १३ | इन दोनोंके गुणस्थानका परि-वर्तन असंभव है। | इन दोनोंका एक गुणस्थानका दूसरे गुणस्थानमें परिवर्तन असंभव है। |
| १८६ | ४ | जादो सुणाम | जाण सुणाम |
| १८६ | ७ | भावाणमुवलंभा | भावोवलंभादो |
| १८९ | ४ | चउव्विहो | चउव्विहा |
| १९० | २ | चेय | च्चिय |
| १९३ | ९ | संगहिदो | संगहेण |
| १९३ | १० | असंगहिदो त्ति | असंगहेण त्ति |
| १९३ | २६ | असंगृहीत | अर्थात् संग्रहकी अपेक्षा |
| १९३ | २६ | असंगृहीत | अर्थात् असंग्रहकी अपेक्षा |
| १९६ | १० | खइय | खय |
| २०५ | ३ | उवसमिय कम्माण | उवसमिओ, कम्माण |
| २०७ | २ | देसघादि | देससव्वघादि |
| २०७ | १४ | सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व इन दोनों प्रकृतियोंके देशघाति स्पर्धकोंका | सम्ययक्त्वके देशघाती और सम्यग्मिथ्यात्वके सर्वघाती स्पर्धकोंका |
| २०८ | ६ | ,सम्मदंसणंसाभावदो | सम्मदंसणंसाभावादो |
| २१२ | ३ | पंचिंदिय पज्जत्त | पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त |
| २१२ | १८ | योनिमतियोंमे | योनिनी जीवोंमें |
| २१२ | २७ | योनिमतियोंमे | योनिनियोंमें |
| २१२ | २९ | भाव भी है और क्षायोपक्षमिक भाव भी है | भाव है और क्षायोपक्षमिक भाव है। |

| पृष्ठ | पंक्ति | मुद्रतिपाठ | संशोधितपाठ |
|---|---|---|---|
| २१३ | १६ | योनिमतियोंमें | योनिमियोंमें |
| २१६ | ६ | मंदबुद्धिसिस्सा | मंदबुद्धिसत्ता |
| २१६ | १० | पंचिंदियपज्जत्त | पंचिंदिय-पंचिंदिय पज्जत्त |
| २१६ | २२ | मंदबुद्धि शिष्योंके | मंदबुद्धि जीवोंके |
| २१६ | २७ | पंचेंद्रिय पर्याप्तकोंमें | पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त-कोंमें |
| २१७ | ३ | वितत्थ भावोव | वि तब्भावोव |
| २१७ | १६ | होनेवाले भावोंका ज्ञान पाया | इस भावकी उपलब्धि हो |
| २२० | ७ | पमत्तसंजदा | पमत्तसंजदो |
| २२१ | ७ | ओघम्मि गदगुण | ओघप्पिदगुण |
| २२१ | २० | भावोंकी अपेक्षा ओघमें कहे गये | भावकी अपेक्षा ओघमें विवक्षित |
| २२५ | ९ | सजोगिकेवली | सजोगिकेवली अजोगिकेवली |
| २५२ | ८ | रासीए वि | रासी वि |
| २५२ | ९ | होंति त्ति तो वि | होंति तो वि |
| २५२ | २२ | कालसे संचित असंयत | कालसे संचित हुई असंयत |
| २५२ | २३ | इस कालका | इस कालके भीतर |
| २५४ | ११ | तरेण ड्डिइसंचओ | तरेण जइ संचओ |
| २५४ | २८ | अंतरालसे स्थितिका | अंतरालसे यदि |
| २५५ | १६ | प्रमाणराशिसे फलराशिको गुणित करके और इच्छाराशिसे | फलराशिसे इच्छाराशिको गुणित करके प्रमाणराशिसे |
| २६४ | १ | भागमेंत्तादो | भागत्तादो |
| २६५ | ६ | चये | चेय |
| २६७ | ६ | ड्डाणे हिंतो | गुणड्डाणेहिंतो |
| २६७ | १९ | स्थानोंसे | गुणस्थानोंसे |
| २६८ | १ | पंचिंपज्जत्ततिरिक्ख पंचिंदिय | पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त पंचिंदिय |
| २६८ | ५ | संजममुवलंभस्स | संजमलंभस्स |
| २६८ | ८ | संजमासंजममुवलंभादो जोणिणीसु | संजमासंजमलंभादो तिरिक्खजोणिणीसु |
| २६८ | १२ | पंचेंद्रिय पर्याप्त और पंचेंद्रिय योनिमती | पंचेंद्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिमततिनी |
| २९२ | ७ | संखेज्जगुणा | असंखेज्जगुणा |

| पृष्ठ | पंक्ति | मुद्रतिपाठ | संशोधितपाठ |
|---|---|---|---|
| २९६ | २२ | संख्यातगुण | असंख्यातगुणित |
| २९८ | ४ | आहाररिध्दीओ लब्भइ | आहाररिद्धीओ उवलब्भइ |
| ३०८ | ९ | भागो | भागो। कारणं चिंतिय वत्तव्वं। |
| ३०८ | ११ | सिद्धिएहि अणंतगुणो | सिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहि अणंतगुणो |
| ३०८ | ११ | गुणकार है। | गुणकार है। कारणका विचार कर कथन करना चाहिये। |
| ३१२ | ६ | विसेसा | विसेसो |
| ३१६ | ८ | संखेज्जगुणा | संखेज्जा गुणा |
| ३१६ | २१ | अपेक्षा संख्यात गुणे है। | अपेक्षा बहुत अधिक संख्यातगुणे है। |
| ३१७ | ७ | विप्पडिसेहत्तादो | विप्पडिसेहादो |
| ३२१ | १० | परूविदत्तादो | परूविदत्थत्तादो |
| ३२१ | २६ | ये बहुत बार प्ररूपण किये जा चुके हैं। | इनके अर्थका बहुत बार प्ररूपण कर आये हैं। |
| ३२७ | ९ | वासेण | वासेहि |
| ३२७ | ११ | मछद्दंतस्स | मछंडतस्स |
| ३२७ | ११ | सामण्णं | सामणं |
| ३२८ | ३ | कुदो? | --- |
| ३३० | ७ | सागरोवम | बे सागरोवम |
| ३३० | २१ | सागरोवम | दो सागरोपम |
| ३३३ | ३ | किण्हलेस्सिएसु | किण्ह-णीललेस्सिएसु |
| ३३३ | १७ | कृष्ण | कृष्ण और नील |